अक्षर केतन

मूल कवयित्री

डॉ. केतवरपु राज्यश्री

अनुवादक

‘अनुवादश्री’ डॉ. एम. रंगय्या

A K S H A R   K E T A N
BY
Dr. Kethavarapu Rajyasri

© **author**

First Edition : **December 2015**

Published by :
Dr. Kethavarapu Rajyasri
HYDERABAD-20

For Copies :
Dr. Kethavarapu Rajyasri
301, Gokul Apartments,
Street No. 4, Ashok nagar, HYDERABAD-20
Cell : 8500121990, Ph. No. 27650267
Email : rketavarapu@gmail.com

Price : **Rs. 75/-**
US : $5

Printed at :
Akshaya Graphics
Chikkadpally, Hyderabad.
Cell : 9989890588
Email : akshayatammisetty@gmail.com

Laser Type setting :
Azam Khan, Hyderabad-500 012
Cell : 9346966392.
Email : sakushi786@gmail.com

केन्द्रीय हिंदी समिति
भारत सरकार
CENTRAL HINDI COMMITTEE
GOVT. OF INDIA

MEMBER :
Dr. Lakshmi Prasad Yarlagadda
Ph.D. (Hindi), Ph.D. (Telugu)
Former Member of Parliament (Rajya Sabha)

सदस्य
आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद
पीएच.डी. (हिंदी), पीएच.डी. (तेलुगु)
पूर्व सांसद (राज्य सभा)

आशीर्वचन

कविता उच्चतम मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है और वह जीवन की समालोचना भी है । कविता आत्मा के संगीत है । लोगों की चिंताओं को शांत करने और उनके विचारों को उन्नत करने में कविता एक सच्चे मित्र का काम करती है । सारा बह्मांड एक अदभुत काव्य है । कविता सृष्टि का सौंदर्य है । मानवीय अनुभूतियों, भावों, विचारों और भाषा की सुरभित कली है कविता । साहित्य का उत्तम अंग है काव्य । काव्य का साध्य है सत्य और साधन है सौंदर्य । जहाँ न जाय रवि, वहाँ जाय कवि । हमारी अन्तस्थ सुप्त भावनाओं को जाग्रत करने का सामर्थ्य कवि में होता है । डॉ. केतुवरपु राज्यश्री बहुआयामी प्रतिभा की धनी हैं । आधुनिक तेलुगु कविता को केतुवरपु राज्यश्री ने अपने कृतियों से सुसंपन्न बनाया है । इनकी कई रचनाएँ दूसरी भाषाओं में अनूदित हुई हैं । वर्तमान पीढी की कवयित्रियों में डॉ. केतुवरपु राज्यश्री महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं । "अक्षर केतनम्" इनकी नवीनतम् तेलुगु मुक्तक रचना है, जिस को हिन्दी में अनुवाद श्री डॉ. एम. रंगय्या ने रूपान्तरित किया है । डॉ. एम रंगय्या वरिष्ठ पीढी के लेखक व अनुवादक हैं । इनकी कई रचनाएँ पुरस्कृत हुई हैं । डॉ. केतुवरपु राज्यश्री की काव्य-वस्तु अक्षर जगत्, कला जगत् तथा समकालीन मानव-जीवन को अपनी परिधि में समाहित कर चलती है । इन्होंने जहाँ एक ओर अक्षरों की असीम शक्ति और प्रयोजनकारिता का समर्थन किया है, वहाँ दूसरी ओर मानव की गहरी संवेदनाओं को भी वाणीबद्ध किया है । इन कविताओं में लेखिका के विचारक का रूप स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है । जीवन और जगत के विभिन्न दृश्यों को इन्होंने अपनी कल्पना के रंग में रंग लिया है ।

डॉ. केतुवरपु राज्यश्री के लयात्मक मुक्तकों की लय निरंतर प्रवाहमन है । इनकी सभी कविताएँ प्रौढ हैं और इन कविताओं के अध्ययन से यह विदित होता है कि इनकी रचना पहुँचे हुए कलाकार के द्वारा हुई है । मानव-जीवन के बाहूय एवं अंतरंग पक्षों तथा युगीन परिवेश के गहन निरीक्षण के साथ-साथ आधुनिक साहित्य का भी गहन अध्ययन करने के कारण कवयित्री की दृष्टि व्यापक हो गयी और जीवन व अक्षर जगत के प्रति इनके विचार स्पष्ट एवं प्रासंगिक बन पडे हैं । वे लिखती हैं -

ज्ञान और अज्ञान में
एक ही अक्षर का अंतर
धरा और गगन के
बीच की है दूरी ।

प्रौढ - शिक्षा का लेखिका ने खूब समर्थन किया है । सामाजिक असमानताओं को मिटाने की शक्ति रखने वाले अक्षरों की इन्होंने वंदना की है । सभी दानों में विदयादान की महन्ता की इन्होंने घोषणा की है । सुषुप्त समाज में चेतना का संचार करने की शक्ति रखने वाले अक्षरों ने कई जीवनों को सुधारा है । अक्षरों के उदर-भर में जो विज्ञान की राशि है, वह अमूल्य है । कविता का रूप धारण कर ये अक्षर हृदय-स्पंदनों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं । अक्षरों की अदभुत सजावट कर कई कवियों ने महान से महान काव्य-ग्रंथों का सृजन कर असीम ख्याति अर्जित की है । अक्षरों से भरे पुस्तक का मूल्य होता है, लेकिन अक्षर होते हैं अमूल्य ।

प्रसव वेदना को भोग
मधुर काव्यों को
जन्म देते हैं
अक्षर ।

अक्षरों में करुणामृत छिडक कर पाषाण हृदय को भी पिघलाने की शक्ति होती है । दुख-सागर को पार कराकर सुखों के तट पर पहुँचा देते हैं अक्षर । वे लिखती हैं -

"धन के पीछे चलने पर
बचेगा दुःख
अक्षर का अनुसरण करने पर
होगा ज्ञानोदय ।"

राज्यश्री लिखती हैं कि अक्षर में प्राण-प्रतिष्ठा कर मानव ने शिष्टता सीखी । मनुष्य का जीवन नश्वर है, किन्तु अक्षर हैं अनश्वर । जिस प्रकार सूर्य किरणें अंधकार को मिटाती हैं उसी प्रकार अक्षर अज्ञान को मिटाते हैं । दिल और दिमाग को उत्तेजित करनेवाली और संस्कर प्रदत्त करनेवाली इन तेलुगु कविताओं को "अक्षर केतन" शीर्षक संकलन के रूप में हिन्दी में रूपान्तरित करने में डॉ. एम. रंगय्या जी ने अपनी कुशलता का परिचय दिया है और हिन्दी पाठकों को इस अमूल्य रचना से परिचित कराने का महान कार्य किया है । इस अवसर पर कवयित्री डॉ. केतुवरपु राज्यश्री और अनुवादक डॉ. एम. रंगय्या जी का मैं हार्दिक अभिनंदन कर रहा हूँ । मेरा विश्वास है कि हिन्दी के पाठक इस संकलन का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद

फोन : 040-2323 4814
सेल : 9490189824
फैक्स : 040-23236911
ई-मेल : vc@teluguuniversity.ac.in

पोट्टि श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय
POTTI SREERAMULU TELUGU UNIVERSITY

आचार्य एलूरि शिवारेड्डी
उपाध्यक्ष

ललित कला केंद्र
पब्लिक गार्डन्स
हैदराबाद-500 004

अक्षर संदेश

"अक्षर हैं सीमित, उनके बिखेरता ज्ञान-परिमल, है विश्व व्याप्त" राज्यश्री का यह कथन इन कविताओं में सार्थक बन रहा है। उनकी कल्पना में झूलने लगा। भावधारा में अवगाहन करने लगा। अमित काव्य ऋचि होने पर भी सुदीर्घ काव्य पढ़कर ख़ुश व परवश होने के दिन चले गए। व्यक्तिगत दृष्टि से हर पल मूल्यवान होते आज के जन-जीवन में, ये संक्षिप्त कविताएँ मन को उत्तेजित करती हैं।

"अक्षर की
बनाई नींव पर
निर्भय हो खड़ा होगा
व्यक्तित्व।"

इसे बहुत सोच-विचार कर कहा गया। संपत्ति गर्वीला बनाती है, पर अक्षर अहंकार को दूर करेगा। यह भुक्तभोगी की बात है।

इसके पूर्व अनेक रचनाओं का सृजनकर राज्यश्री जी को यह एक और कीर्ति केतन है। उन्हें हार्दिक अभिनन्दन।

"रसभारती", म.नं. 1-1-336/77 (518), विवेकनगर, चिक्कड़पल्ली, हैदराबाद-20 फोन: 040-27632020

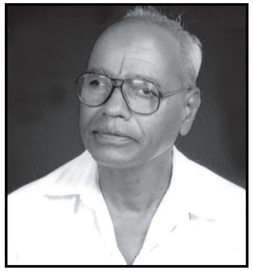

भारत भाषा-भूषण
कवि तिलक **डॉ. तिरुनगरि**
617/5, डी. नगर, चिन्तल (एच.एम.टी.)
हैदराबाद-500 054

पेटिकांतर्गत रतन

वर्णैः कति पयैरेव
ग्रथितस्य स्वरैरिव
अनन्ता वाङ्मया स्वाहो!
गेय वस्वे विचित्रता!!
-माघ, शिशुपाल वध (2-72)

कतिपय स्वरों से (सप्त स्वरों से) गुंथे संगीत की विचित्रताओं के समान, कतिपय वर्णों से (50 अक्षरों से) विरचित वाङ्मय की विचित्रता भी अनन्त है न! यह उपरोक्त श्लोक का भाव है। अक्षरों की विचित्रता अनन्त है- यह माघ का कथन है।

"मेरे अक्षर जन-शक्तियों द्वारा ढोते विजय के ऐरावत हैं
मेरे अक्षर चाँदनी में खेलती सुंदर लड़कियाँ हैं।"

तिलक ने कहा-

"अक्षरों से कवि के करते आल्केमि है कविता।"

इस रहस्य से अवगत इस पीढ़ी की कवयित्री श्रीमती केतवरपु राज्यश्री है। सतत कविता हृदय-हरित का पोषण करती हुई काव्य-सृजन रत राज्यश्री जी ने अब भी गीत, वचन कविता संकलनों को प्रकाश में लाकर कवयित्री के रूप में अपनी पहचान बना ली।

आधुनिक कविता- प्रक्रियाएँ- नानीलु, पंख, व्यंजकों की रचनाकार साहित्य के आलोचकों की प्रशंसा पा सकी। अब "अक्षर केतन" के नाम से सुंदर मुक्तकों में अक्षरों की महिमा को स्पष्ट किया है राज्यश्री ने।

"अक्षर हैं सीमित,
उनके बिखेरता
ज्ञान-परिमल
है विश्व-व्याप्त।"

"ओम्" नामक अक्षर-महिमा कितनी है हमें वेद वाङ्मय अवगत कराता है।

"अक्षरों का
बिछाया मार्ग
विद्या-कुसुमों का
विकसित बाग।"

राज्यश्री ने बड़े ही सुंदर ढंग से बताया है। "राज्यश्री" सभी दानों में विद्यादान को महत्वपूर्ण मानती है।

"जब धन बाँटने की बात आती है
स्वार्थ अड़चन डालने लगता है।
अक्षरों के बाँट लेने पर
आत्मानंद जन्म लेता है।"

यह कवयित्री का संदेश है।

"माता-पिता के
चलना सिखाने पर
अक्षर
चाल-चलन सिखाते।"

चाल-चलन ठीक न रहनेवाला वास्तव में मनुष्य ही नहीं न! चाल-चलन सिखाते हैं अक्षर।

"हृदय-स्पन्दनों को
अक्षर

रूपायित करें तो
काव्य-झड़ी।"

राज्यश्री जी ऐसी कवयित्री है जिसने प्राचीन एवं आधुनिक काव्य-साहित्यों का भली-भांति अध्ययन किया। नन्नय्या से नारायण रेड्डी तक अक्षरों के कारण इतने महान् कवि बनें। अक्षर-ज्योतियों को आलोकित किया-

"दुख सागर को पार कराकर
सुखों के तट पर
पहुँचा देते
अक्षर।"

"बड़ी बालशिक्षा से
भगवद्गीता तक
क्रमशः मुक्ति पथ की ओर
अग्रसर करेंगे अक्षर।"

इस प्रकार अक्षरों के प्रयोजन को हर मुक्त में अभिव्यक्ति मिली है। कई कवियों ने एक-दो कविताएँ लिखीं, लेकिन अक्षरों पर एक काव्य ही लिखने का श्रेय "राज्यश्री" को ही जाता है। राज्यश्री का शब्द रमणीयार्थ प्रतिपादक है। वह जो भी लिखेगी तेलुगु के प्रख्यात् कवि शेषेंद्र जी के अनुसार कविता कविता-सी होती है।

"करुणमृत को
बिलोते उसके अक्षर
कठिन-शिला को भी
पिघलाते हैं।"

"पाषाणा दीप पीयूषम् स्वंदते"

राज्यश्री जी का यह अक्षर-केतन अक्षर-केतन ही। हृदय को स्पंदित करते अच्छी कविता को रचनेवाली राज्यश्री जी को मेरा अभिनंदन। इस कवयित्री के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

-डॉ. तिरुनगरि

रंगनाथ
प्रमुख सिनी अभिनेता एवं लेखक

परिचित केतवरपु राज्यश्री जी

तनिक-तनिक खिलानेवाली माँ का
"अक्षर अभिषेक" करना है विचारों के वसंत ने कहा-
अणु-अणु में माँ को समाकर
माँ की मधुरिमा का अर्थ बताया।

प्राचीन ग्रंथों में दीपक लगी है
कवि सम्मेलन में- कुर्सियाँ ख़ाली पड़ी हैं
यंत्रों के कई जाने पर भी- कूलियों की ज़रूरत बनी हुई है
नटखट कहते हुए- फुलझड़ियों को छोड़ना

"चाँदनी के सोपान चढ़", "पंखों" के निकलवाने पर भी-
"दिल की धड़कन कहते "नानी" से सच बोलने पर भी-
"नहीं कविताओं से, धीमी आवाज़ करने पर भी-
सबमें यथार्थ - ताने मारना
असहाय - आर्द्रता
आक्रमण, अभ्यर्थना-आश्वासन

अपनी कलम की छुअन का अंश ही नहीं
अपने आक्रोश का अंत ही नहीं
"तुझ में तू कहते अंतर्यान कराकर
ज्ञान-खानों को दिखलाकर, आध्यात्मिक संपत्ति देकर
जीवन की सफलता की राह दिखा दी।

दौड़ती क़लम कई हैं साहित्य में
बोलने वाले कुछ ही हैं- जीवन में
टूटते मानव-संबंध-
नष्ट होते मानवीय-मूल्य-
हृदय को कुरेदने पर
प्रेम का अभाव जीवन को रेगिस्तान में बदलेगा
हँसी को चिपकाकर जीने में असमर्थ हो-
मनुष्य से दूर बनी तृप्ति को आमंत्रित करते
हे तृप्ति! तू कहाँ, परितप्त हो ढूँढ रहा,
साहित्यश्री, प्रज्ञाश्री के बिरुद भले ही जगत दे-
एक मानवतावादी के रूप में श्रीमती राज्यश्री!

-रंगनाथ

पेटिकांतर्गत रतन

अक्षरों के प्रदान करती अनुभूति अमृत है। भाषा के द्वारा अभिव्यक्त न होनेवाले भाव, अनुभ्व, कष्ट, अश्रुजल, आनंद, अपनेपन को व्यक्त करता है। माँ के भीतर के अमृत को, पिता के भीतर के अनुशासन को व्यक्त करने के लिए अक्षर ही आलंबन है। "अ, आ" से प्रारंभ कर धीरे-धीरे मुक्ति के सोपानों को बिछाते हैं अक्षर। अक्षर पर एक कवि सम्मेलन संपन्न हुआ तो मैंने "अक्षर ही मेरा हथियार" कहकर समाज में फैले अत्याचारों पर एक कविता पठन किया। तब से अनजाने ही अक्षर मेरे मस्तिष्क में निक्षिप्त होकर-इस पुस्तक में मुक्तकों के रूप में रूपायित हुए-

"अक्षर हैं सीमित,
उनके बिखेरता
ज्ञान-परिमल
है विश्व-व्याप्त।"

बड़ी बाल-शिक्षा से लेकर भगवद् गीता तक क्रमश: मुक्ति-पथ की ओर अग्रसर कराते अक्षरों के आगे नमन करते रचित यह पुस्तक आप सबको प्रेम-पात्र बनेगी, आपका सबका आदर प्राप्त करेगी- आशा कर रही हूँ।

मेरी कविताओं को मैंने प्रकाशन के पूर्व श्री तिरुनगरी को बताया। उन्होंने बताया कि कविताएँ अच्छी हैं- इन्हें छापने को कहा। तभी मैंने प्रकाशित किया। इस बार भी मैंने "अक्षर केतन" को दिखाया।

"पेटिकांतर्गत रतन" नाम से दो शब्द लिखकर आशीष दिये डॉ. तिरुनगरी जी को मेरा दिली नम: सुमांजलि।

"अक्षर संदेश" नाम से संदेशात्मक "पुरोवाक्" लिखने वाले पोट्टि श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डॉ.के. शिवारेड्डी जी को विशेष धन्यवाद।

"परिचित केतवरपु राज्यश्री" नाम से मेरी रचनाओं की विशेषताओं को कवितात्म रूप में लिखे कविता के कवि श्री रंगनाथ जी को धन्यवाद।

-राज्यश्री

अक्षर केतन

अक्षर हैं सीमित
उनके बिखेरता
ज्ञान-परिमल,
है विश्व-व्याप्त।

अक्षर है
नीरव तरंग
समस्त जाति को
जागृत करते आयुध।

अक्षरों के अभ्यास के दिन
लिखा गया ओम् नम: शिवाय:
कली की अवस्था में ही
मोक्ष की नींव है अक्षर।

नन्नय, तिक्कना, एर्राप्रगड़ा[1]
गिडुगु, श्री.श्री. गुरुजाड़ा[2]
कविता में धन्य बने हैं
ये छप्पन अक्षर ही।

कालगर्भ में
मिल जाने को हैं सभी
क्षर रहित हैं
अक्षर ही।

अक्षरों का
बिछाया मार्ग
विद्या कुसुमों का
विकसित बाग़।

1) तीन प्राचीन कवि, जिन्होंने “महाभारत” का आँध्रीकरण किया है। ये कवित्रय कहलाते हैं।
2) तीन आधुनिक कवि।

अक्षर तूणीरों का
संधान कर
समाज की असमानता को
दूर कर।

भुजा पर
अक्षरों की थैली
जीवन में ढोने के
वजन व दायित्व का प्रारंभ।

जब धन बाँटने की बात आती है
स्वार्थ अड़चन डालने लगता है
अक्षरों के बाँट लेने पर
आत्मानंद जन्म लेता है।

विश्वनाथ जी[1] के
“सहस्त्रफण” जी[2] के
अक्षरों को
जनता के नीरांजन!

माता-पिता के
चलना सिखाने पर
अक्षर
चाल-चलन सिखाते!

निद्रामग्न प्रकृति को
अक्षर
सुप्रभात बन
जागृत करता!

1) तेलुगु के प्रख्यात् कवि, 2) विश्वनाथ जी की लोकप्रिय रचना।

सि.ना.रे[1] नामक
अक्षर
युवा कवियों के लिए हैं
मंत्राक्षर।

अक्षरों से अनजान माँ ने
कई
जीवनों को
सुधारा।

उस घर की दीवारों पर
हैं "अ आ इ ई" अक्षर!
शायद गुड़िया अभी-अभी
पाठशाला में दाख़िल हुई हो!

1) प्रसिद्ध कवि सी. नारायण रेड्डी

अनुसृजित
महाभारत
अक्षरों को
कवित्रय का भोज!

"रामायण कल्पवृक्ष"[1]
मानव जीवन के
अक्षर हैं
भाष्य।

कृष्णशास्त्री[2] की कविताएँ
अक्षरों की
चमेलियों की
सुगंध

1) रचना का नाम 2) तेलुगु के ख्याति प्राप्त कवि।

ज्ञान और अज्ञान में
एक ही अक्षर का अंतर
धरा और गगन के
बीच की है दूरी।

अक्षरों का
हेर फेर
माथे की लकीरों को
बदल सकेगा।

अद्भुतों का
आविष्कार
अक्षरों को ही
साध्य।

"सिनारे" की
कविताओं में
अक्षरों का
अमृत स्नान।

अक्षरों के
उदर भर में
लाखों के मूल्य का
विज्ञान

अक्षरों के
चित-पट में
पोत्तूरि[1] के सृजन में
व्यंजना।

1) साहित्यकार

"मैं" नामक अक्षर
अहंकार युक्त है
"हम" नामक अक्षर
एकता के प्रतीक हैं।

अक्षरों में
चलन नहीं
लेकिन मनवाले मनुष्य को
स्पंदित करते।

हृदय-स्पंदनों को
अक्षर
रूपायित करें तो
काव्य-झड़ी!

किन्नेरसानी[1]
नयागरा[2]
अक्षरों का
राकांचल।

अक्षरों से भरे
पुस्तक का होता मूल्य
अक्षर का मूल्य
अमूल्य।

अक्षर को
प्यार से छूकर देख
प्रेम-अनुराग में
नहा देगा।

1) - 2) रचनाएँ

अक्षरों की सजावट देख
मनुष्य के
व्यक्तित्व का
अंदाजा कर।

अक्षरों को
पंख
पहनाकर छोड़ा है
सुगम बाबू[1] ने।

रात की पाठशला में अक्षर
लिखते वयोजन
अक्षर को
वय से क्या काम।

1) आधुनिक कवि

बाल मुरली[1] का
तिल्लाना
अक्षरों का
तमाशा।

संगीत के
साम्राज्य के
राजकुमार हैं
अक्षर के सरगम।

“मेरे”, “तेरे” हैं अक्षर
गोपी[2] जी की क़लम में
“नानीलु”[3] में
रूपांतरित।

1) गायक, 2) कवि, 3) गोपी की रचना

बापू[1] के
कार्टून
अक्षरों की
गुदगुदी।

अक्षर
नम्र बनना
सिर उठाकर जीना
सिखाता है।

कुछ को
अक्षरों की प्यास
कितना भी पिये
अनबुझी प्यास।

1) चित्रकार

बालू[1] के गले में
ओंकार नाद अनुसंधान बन
अक्षर
अमरता को प्राप्त करते।

पोतुकूची[2] के
तारे
अक्षरों के
चमत्कार।

मुँह की बात से
अधिक
अक्षर निबद्ध
हस्ताक्षर ही मूल्यवान।

1) बालू : बाल सुब्रह्मण्यम/गायक, 2) कवि

घंटसाला[1] के स्वर में
अक्षरों के सरगम
गंधर्वगान के
प्रतीक।

अव्यक्त
अनुभूतियों के
अभिव्यक्ति के साधन हैं
अक्षर।

"अ" अक्षर का
मूल्य कहाँ ?
"अम्मा" नामक दो अक्षरों में
छिपा है अमूल्य प्रेम !

1) सिनी गायक

बापू[1] और रमणा[2] की
चित्र-रचनाएँ
तेलुगुपन की
अक्षर-ज्योति।

पलों के बीतते समय
घट जाती है आयु
अक्षरों के सीखने पर
विदित होगी आयु की पकड़।

निर्धन को
अक्षर सीखने की चाह
धनी को
मालूम नहीं अक्षर का मूल्य।

1, 2) चित्रकार

पत्थर पर खुदे अक्षर
शिला फलक
जल पर के अक्षर
जीवन-सत्य।

पराजय और अपमान को
पार करते
साधन हैं
अक्षर।

प्रश्न करें
या जवाब दें
अक्षरों से ही
संभव।

प्रसव वेदना को भोग
मधुर काव्यों को
जन्म देते हैं
अक्षर।

गोद में बिठाकर
अक्षरों को लिखवाकर
नाम के आगे डिग्री के जुड़ते ही
सब अपनी प्रतिभा मानते।

आटवेलदी[1], तेटगीति[2]
पद्य का कोई भी नाम हो
अक्षर है वे ही
मात्राएँ होती भिन्न।

1, 2) तेलुगु के छंद

कालीदास की जीभ पर
“माता” के लिखे बीजाक्षर
महाकवि में
बदले।

अक्षर-ज्ञान से
विज्ञान के जोड़ने पर
नंदन वन
बनेगा जीवन।

श्यामपट पर
सफेद अक्षर उस दिन
श्वेत पट पर
काले अक्षर आज का रिवाज।

धन के पीछे चलने पर
बचेगा दु:ख
अक्षर का अनुसरण करने पर
होगा ज्ञानोदय।

अक्षर कभी
ग़लत अर्थ नहीं लेंगे
अर्थ से अवगत हो
अनुनय करेंगे।

देश का राजा
निरक्षर होने पर भी
अक्षर सीखा मंत्री हो तो
देश रहेगा सुरक्षित।

अक्षर पीछे पड़
व्यथित हैं करते
उन्हें आयुध में बदल
अन्याय का सामना करने।

"अ आ इ ई" सीखे
गाँव की माँ को छोड़
डॉलरों के लिए
पराये प्रदेश में।

अक्षर
एक कल्पवृक्ष
चाहने वाले को
जितना चाहे देगा।

अक्षर से अनभिज्ञ किसान
खेत में
बीजाक्षर
बोतता है।

नाल छेदन से
कहते हैं एक अक्षर भी सीख न सकेगा
अक्षर की आयु की पकड़ है
नाभि।

कुछ भी हो या न हो
मनुष्य को
महान् बनाता
अक्षर ज्ञान ही।

गुरु के मुख से
सीखे गए अक्षर
मंत्राक्षर में
बदलेंगे।

अक्षर
नग्न सत्य बन
कसैले मात्राओं के समान
निगलना कठिन।

अक्षरों के
बताये सत्य
निर्दोषों की
रक्षा करते हैं।

अंतरिक्ष शोधकों या
भूगर्भ शोधकों को
आलोक पथ पर बढ़ाता है
अक्षर ही!

“मेरे” अपने कहलाने वाले सभी
छोड़ भी दें
मित्र-सा ढाढ़स बंधाता
अक्षर

अक्षर गवाक्ष
खोल देख
निस्तेज बनी आँखों को
रसानुभूति होती!

मन के घाव को
अंगराग
अक्षर देता
सहारा!

करुणामृत
छिड़कते अक्षर
कठिन शिला को
पिघलाते!

अक्षरों के
नाज़-नख़रे हैं
नयागरा के
जल प्रपात।

अक्षर
माँ-सा प्रेम करता है
पिता-सा
व्यक्तित्व प्रदान करता है।

अक्षर के बोये
बीज
ठूँठ बने प्राणी के लिए
कोंपल!

दु:ख-सागर को पार कराकर
सुखों के तट पर
पहुँचा देते
अक्षर!

अक्षरों की चमक-दमक
कशीदा से,
अल्लसानि बना
साहित्य-वन[1] में अमर।

अक्षरों से
निक्षिप्त ज्ञान का ख़ज़ाना
मानव-मेधा के
सवाल!

क्षर रहित
अक्षय का
अस्तित्व
अक्षर में छिपा है!

1) एक प्रबंध कवि

अक्षर में
प्राण-प्रतिष्ठा कर
मानव ने
सीखी शिष्टता!

कोरे काग़ज़ों पर
काले अक्षर
जीवन के
नग्न अक्षर!

जन्मदिन के दिन प्राप्त
अक्षर-शुभ कामनाएँ
बहुत समय तक स्मरण रहेंगी
अपूर्व नज़राने के रूप में!

मन की
चिन्ताओं के लिए
तसल्ली के मंत्र हैं
अक्षर।

अक्षरों में निक्षिप्त है
तत्कालीन महान् इतिहास
आज के जीवन की
बुनियाद!

नियमानुसार सुनाई देती
दिल की धड़कनों के
"लबडब" हैं
अक्षर-संकेत।

अक्षर चाहें तो
कुछ भी कर सकेंगे
रोते को हँसा सकेंगे
हँसते को रुला सकेंगे!

अक्षर के
संदेश
रणभेरियों को
बेड़ियों से जकड़ सकेंगे!

सर्वेश्वर की
स्तुति कर
तरते हैं
अक्षर!

पत्रों के
अक्षर
इंतज़ार की
तसल्ली हैं।

अक्षरों ने
सभ्यता सीखी
पाटी छोड़
कम्प्यूटर में आ गये।

मनुष्य की
उम्र है कम
अक्षर की
आयु है चिर।

सम्पत्ति के घटने पर
अक्षर-सम्पत्ति हो तो
संपत्ति पुन:
तेरे पास लौट आयेगी!

भले ही पद्य साहित्य हो
या पद साहित्य
आलंबन होंगे
अक्षर ही!

नित्य जीवन
विधान से परिचय कराती
अक्षर निधि ही
भगवद्गीता!

तिरुनगरी[1] की
कविता झड़ी
थकान रहित
अक्षर गिरि!

अक्षरों को
ग्रंथालयों में
ढेर से रखने पर
नक्षत्रों का आलोक!

अक्षर से
आत्मार्पण के मिलने पर
ज्ञान का ख़ज़ाना
तेरे साथ ही!

1) कवि

जन्मने पर
अक्षरों के शुभसंदेश
मरने पर
अक्षर नीराजन!

मेधावी कहने के लिए
मानदण्ड
अक्षरों को
अनंत रूप में उपयोग करना ही!

मानव-मेधा को
पैना बनाने के
साधन हैं
अक्षर।

क्रांतिकारी के मन में भी
मानवता के बीज
रोप सकेंगे
अक्षर!

अक्षर ज्ञान से वंचित
दादी माँ के मुँह से
सुवर्ण अक्षर जैसे
जीवन-सत्य!

दिन में एक बार
अक्षरमाला के पढ़ने पर
भगवान् के
ध्यान के समान ही।

अक्षर सीखने पर
शासन कर सकोगे भुवि पर
न सीखने पर
भूमि के लिए बनेगा भार!

सूरज के
अँधेरे को भगाने जैसा
अक्षर
अज्ञान को!

अक्षर की
बनाई नींव पर
निर्भय हो खड़ा होगा
व्यक्तित्व!

उपभोग के लिए
मार्ग
मुक्ति के लिए सोपान है
अक्षर!

सागर-मंथन से
अमृत
अक्षर-मंथन से
आत्म साक्षात्कार!

जहाँ संपत्ति है
वहाँ घमण्ड हो सकता है
जहाँ अक्षर है
वहाँ अहंकार नहीं होगा!

बाँसुरी में
फूँके गए अक्षर
मुरलीवादन बन
परवश करेंगे!

उगादि की चटनी में
षड्रुचियाँ
अक्षरों की रुचियाँ
मिष्टान्न!

वरुण याग से
बरसेंगी बरखा
अक्षर यज्ञ से
विकसेंगे जीवन!

"बड़ी बाल-शिक्षा"[1] से
भगवद्गीता तक
क्रमश: मुक्ति पथ की ओर
अग्रसर करेंगे अक्षर!

गीताचार्य की
उवाच
अक्षर रूप धरी
भगवद्‌गीता!

भगवद्‌गीता के
अक्षर
माथे की लकीर को ठीक करती
दीप-काँतियाँ!

1) एक पुस्तक

पेड़ के सिखाये अक्षर

उस गाँव के बीच
पुरखों द्वारा लगाया पेड़
पेड़ ने अपनी गोद में
कई अनाथों को जातकर्म में सहयोग दिया
नवजातों को अपनी शाखाओं पर
झूला बनाकर झुलाया।
कई पथिकों को
छाया प्रदान किया
मधुर फलों से
भूख मिटाया
उस गाँव के बड़े लोग
उसके नीचे आँख-मिचौनी खेलने वाले ही!
इतना ही नहीं
उस पेड़ को पाठशाला में बदल
अक्षरों को जन्म दिया

वहाँ अक्षर सीखने वाले
आज इंजीनियर, डॉक्टर
प्रोफेसर, कलेक्टर के रूप में
उभर आये।
उस छाया में अक्षर सीखनेवाले मिल
साक्षरता दिवस
मनाकर
उस वृक्षराज की
जय-जयकार की।
अक्षर नीराजन
गुरुदक्षिणा के रूप में
समर्पित किया।

अक्षर करते हैं व्यथित

अक्षर मेरे पीछे पड़
कर रहे हैं व्यथित
उन्हें आयुध में बदल
समाज के कलुष को
जड़ समेत
उखाड़ फेंकने
आवेश के उमड़ने से
क़लम हाथ में पकड़ा
भ्रूण हत्यायें, अत्याचार
और बच्चों के ग़ायब करते
दल
बाल कार्मिकों पर पैशाचिक
दण्ड
कीचक में बदलते टीचर
विरासत में बदलते
राजनैतिक ओहदे
अनुचित आय, भूकब्जे
शराब के माफिया
चोरी-लूट
कई-कई
सभी अचानक घेर कर

अपने बारे में लिखने को कहें तो
हमारे बारे में लिखो-
हमारे बारे में लिखो
सबमें स्पर्धा
इतनी अराजकता को
समाप्त करने के लिए
मेरी क़लम अशक्त है
शक्तिहीनता ने आ घेरा
"क़लम तो छोटी है! पर
उसका कण्ठ
सारी जाति को
जागृत कर सकेगा
झटक दे तेरी क़लम
संधान कर
अक्षर तूणीरों को
अंत कर दे समाज के अन्यायों को।"
अंतरात्मा ने
पीठ थपथपा प्रोत्साहित किया
अनश्वर अक्षरों को
आयुध में संधान करने को
निर्भय हो
खड़ी हो गई मेरी क़लम।
कल की पीढ़ी को
जागृत करने।

कवयित्री का परिचय

नाम	:	**डॉ. केतवरपु राज्यश्री**	
शिक्षा	:	एम. कॉम. (उस्मानिया विश्वविद्यालय)	
वृत्ति	:	आंध्र-प्रदेश मंत्रालय में उपकार्यदर्शी (सेवा-निवृत्त)	
प्रवृत्ति	:	लेखन कार्य, वीणा वादन	
		आध्यात्मिक प्रवचन, चेस खेलना, काव्य-गोष्ठी	
प्रकाशित रचनाएँ	:	1. चिरु सव्वेडुलु,	2. गुंडे चप्पुल्लु
		3. ऊहल वसन्तम् ,	4. सिसिंद्रीलु
		5. वेन्नेल मेट्लु ,	6. नीलोकि नुव्वु
		7. तृप्ति नीवेक्कड,	8. बोम्मा-बुरुसु (व्यंजक)
		9. अक्षर केतनम् ,	10. आध्यात्मिक वृद्दुलकेना?
		11. रेक्कल्लो गीतामृत	12. गीतामृत (हिन्दी)
		13. गीतामृत (कन्नड),	14. गीतामृत (ईगंलीस),
		15. Spring of Thoughts	16. My London Trip
		17. आकसानि मिगांलनि	18. व्यास कदंबम
		19. वंद प्रश्नलु - वेल भावालु	
संकलन	:	(1) कविता चेतना,	(2) चेतना कथा-झरी
		(3) गृहहिंसा चट्टम् महिलकु रक्षण कवचम्	
		(4) पर्यावरण चिट्कालु, (5) कलाल कदंबम्	

अन्य रचनाएँ	:	कथलु, सामाजिक अंशों पर व्यासालु आध्यात्मिक रचनाएँ।
संप्रति	:	सहसंपादक, साहितिकिरणम् (मासिक)
अध्यक्ष	:	लयन्स क्लब ऑफ मिलीनियम्
सलाहकार	:	आदर्शवाणी (मासिक)
व्यवस्थापक		
कार्यदर्शी	:	आंध्र प्रदेश सचिवालय, महिला उद्योगुल संघम्
सदस्य	:	(1) श्री त्यागराय गान सभ (2) अशोक नगर वेलफेर एंड कल्चरल सोसायटी।
पुरस्कार	:	(1) भारत भाषा भूषण (2) साहित्य श्री (अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन, भोपाल) (3) स्कला पुरस्कारम् (जी.वी.आर., आराधना संस्था) (4) प्रज्ञाश्री (श्री किरण सांस्कृतिक समाख्या) (5) टंगटूरि प्रकाशम् पंतुलु अपवार्ड (कलानिलयम्) (6) मदर टेरेसा अवार्ड (शी फाउण्डेशन, हैदराबाद) (7) ए.एन.आर. गोल्ड मेडल (8) स्त्रशक्ति (कलानिलयम्) (9) उत्तम कविता पुरस्कार (सांस्कृति संघ एवं विश्वसाहिति संस्था द्वारा) (10) प्रतिभ पुरस्कार (तंगिरालो मेमोरियल ट्रस्ट) (11) उगादि पुरस्कार (वैष्णवी आर्ट्स) (12) प्रपंच तेलुगु सभा में सम्मानित, तिरुपति (13) ताना महासभा में सम्मानित, अमेरिका के डल्लास नगर में। (14) ड़ाक़्टरेट प्रदान - युनैटेड़ थियोलाजिकल रीसर्च यूनिवरसिटी (15) लैफ टैम ऐडुकेषन एछीवमेन्ट अवार्ड (16) युक्ता - लंडन तेलुगु महसभा मे सम्मान